ओसिओला मैकार्टी की सम्पदा

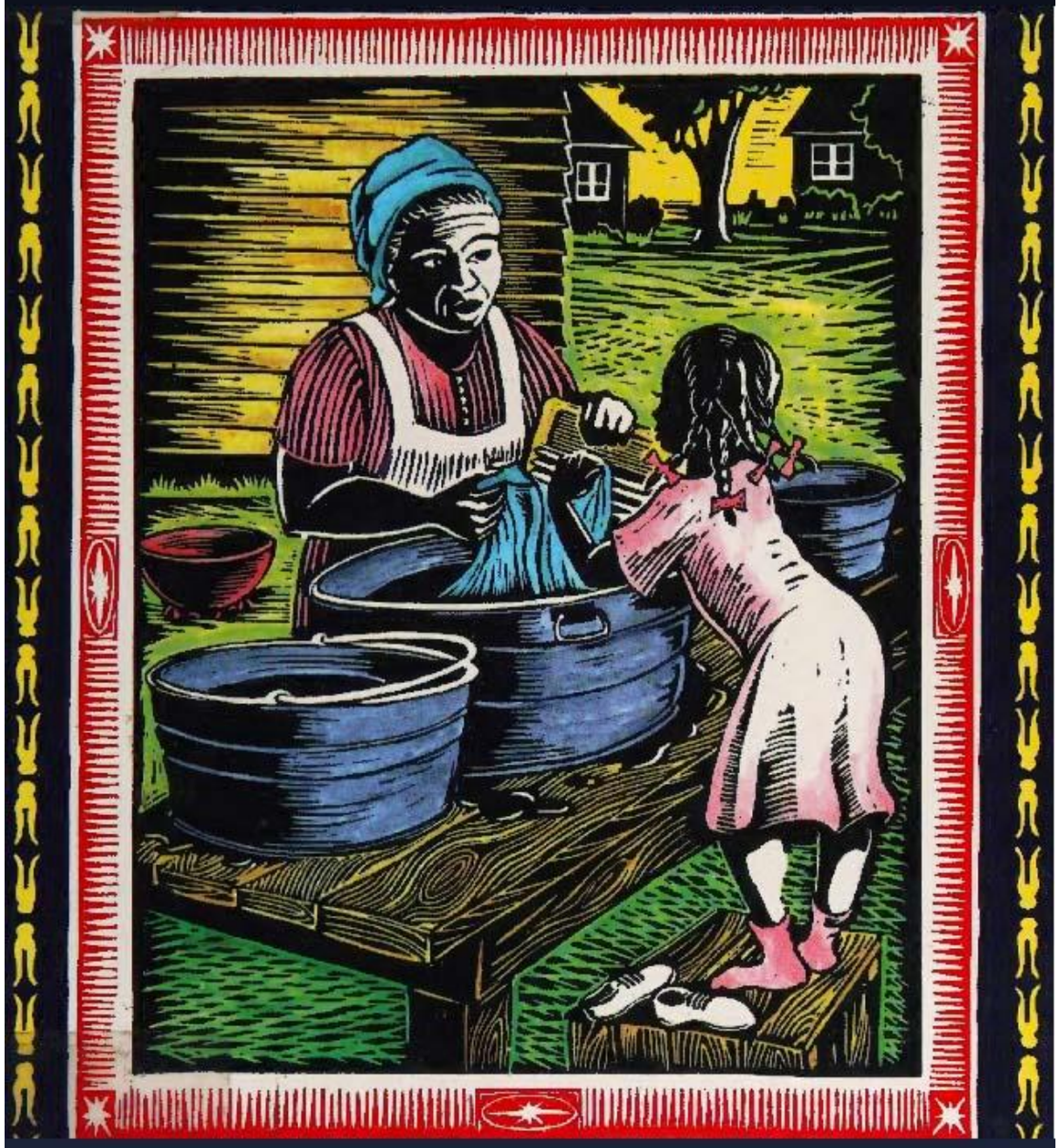

लेखन: एवलिन कोलमैन, चित्रांकन: डैनियल मिन्टर

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ओसिओला मैकार्टी

की सम्पदा

लेखन: एवलिन कोलमैन

चित्रांकन: डैनियल मिन्टर

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लिलि मैकलॉरीन को समर्पित, जिनके बारे में काश मैं लिख पाती। मिज़ मैकलॉरीन पहली काली महिला थीं जिनका दक्षिण में खुद का 'न्यूज़ स्टैण्ड' (अखबार, पत्रिकाएं बेचने की थड़ी) था। उन्होंने अखबार बांटने वाले लड़कों और लड़कियों को इस तरह प्रशिक्षित किया कि वे काम का सम्मान करना सीख सकें। उन्होंने अपना जीवन हैटिसबर्ग के समुदाय को समर्पित किया।

और डॉ. सैन्ड्रा गिब्स, डॉ. पॉलैटा ब्रेसी, सिल्विया स्प्रिंकलर हैमलिन, सूज़ी वाइल्ड, बारबरा ब्रायन्ट, डॉ. पामेला बैरन व अन्य के लिए भी, जो बच्चों के साथ किए गए मेरे काम की कद्र करते हैं। - ई.सी.

अमैण्डा, शानिक, जैसिका व कीरो के लिए। - डी.एम.

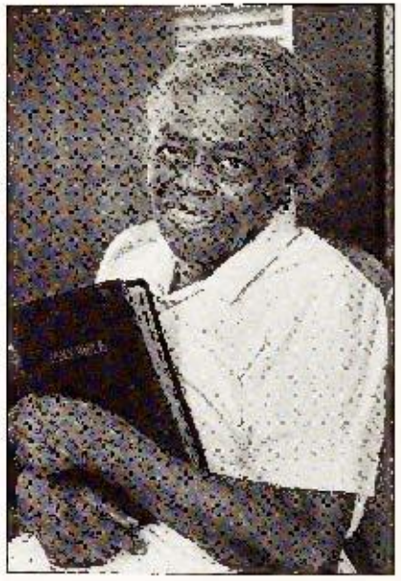

अनुक्रम

अध्याय 1

अध्याय 2

अध्याय 3

अध्याय 4

लेखिका की टिप्पणी

अध्याय 1

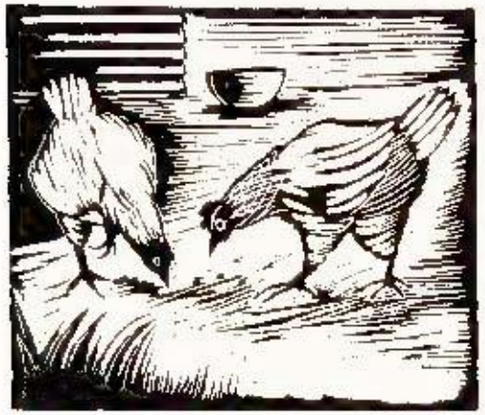

हर दिन, अल्ल सुबह, जब सूरज बादलों की आड़ से निकलता और चाँद नज़रों से ओझल हो जाता, ओला मैकार्टी अपने बिस्तर से उछल कर उठती। दरअसल नाम तो उसका ओसिओला था, पर परिवार में सब उसे ओला ही कहते थे। वह 1913 का साल था जब ओला मिसिसिपि के व्यस्त हैटिसबर्ग नामक आरा-मिल कस्बे में अपनी नानी जूलिया व मासी एवलिन के साथ रहने आई। वे तीनों छह कमरों वाले एक किराए के मकान में रहते थे, जो बाद में उनका अपना खुद का घर बना।

ओला को इस नई जगह रहना बेहद अच्छा लगा। हैटिसबर्ग मिसिसिपि केन्द्रीय रेलरोड का मुख्यालय था। उसमें तीन बड़ी लकड़ी चीरने की आरा मिलें और कई दुकानें थीं। यह डी'लो से बिलकुल फर्क था, जो पास का ही एक छोटा कस्बा था, जहाँ ओला पहले अपनी माँ लूसी और सौतेले पिता के साथ रहती थी। उसके सौतेले पिता टरपेन्टाइन उद्योग में काम करते थे।

ओला ने जल्दी से कपड़े पहने और बाहर दौड़ी। काम का समय जो हो चुका था। उसने मुर्गियों को चुग्गा दिया, लकड़ियाँ इकट्टा कीं, ताकि जब अलाव की आँच धीमी हो उन्हें काम में लिया जा सके। तब उसने सूअरों को खिलाया।

अब खेलने का समय था। ओला ने माटी के केक बनाए, अपने छोटे कुत्ते पाउट के साथ लाल डुरा जर्सी सूअर के पीछे भागी, घर में बनी पतंग उड़ाई। धूपदार दिनों में वह जड़ों और लम्बी घास से अपने लिए गुड़ियाएं भी बनाती थी। ओला को खेलना पसन्द था, पर जो वह सच में करना चाहती थी वह था अपनी नानी के साथ बड़ों वाला काम।

कभी-कभार ओला खेलना बन्द करती और नानी को बड़े से लोहे के पतीले में कपड़े डालते देखती। उस पतीले के नीचे नानी को आग सुलगाते देखती। यह पतीला, जो परिवार के पास सालों से था, उसमें कपड़ों को उबलते-खुदबुदाते देखती।

तब नानी एक डंडे से भापते कपड़ों को उठा कर कपड़े धोने के टबों में डालती। ओला इतनी लम्बी न थी कि टबों तक पहुँच सके। पर एक दिन नानी ने उसे एक खोखे पर खड़ा कर दिया ताकि उसके हाथ टब तक पहुँच सकें। ओला बड़ी खुश हुई। उसने अपना हाथ गरम साबुनी पानी में तब तक घुमाया, जब तक उसके हाथ खुद अपनी शमीज़ न आ लगी। उसने शमीज़ को धातु की रगड़नी पर ऊपर-नीचे घिसा। जब उसे लगा कि वह बिलकुल साफ़ हो चुकी है, उसने शमीज़ को साफ़ पानी के पहले टब में डाला और उसे गोल-गोल घुमाया। तब उसे साफ़ पानी के दूसरे टब में डाला। अपने छोटे हाथों से जितनी ज़ोर से हो सका निचोड़ा।

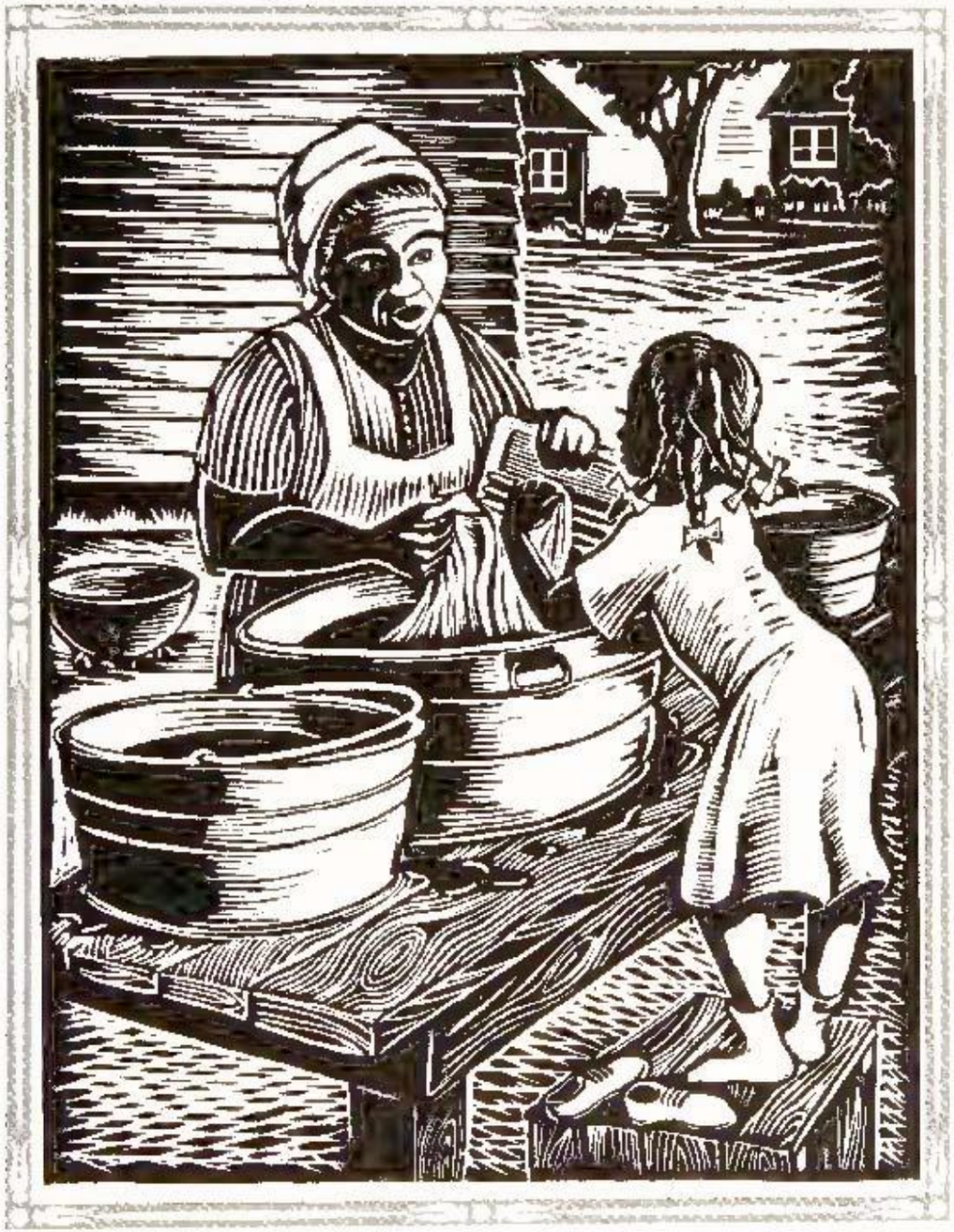

अब शमीज़ कपड़े सूखने की डोर पर लटकाने के लिए तैयार थी। ओला पहली बार बड़ों वाला काम पूरा कर बेहद खुश थी।

नानी कपड़े धोने के टब में साबुन भी बनाया करती थी। नानी को देख-देख कर ओला ने भी साबुन बनाना सीखा। सबसे पहले तो नानी बची हुई खाना पकाने की चर्बी को कलछुड़ से टब में डालती। तब तक रुकती जब तक चर्बी उबलने न लगे और तब उसमें रेड डेविल लाय (धोबी क्षार) के दाने छिड़कती। तब पानी मिला घोल को हिलाती जाती, जब तक वह गुठलियों के बिना गाढ़ा न हो जाता। तब वह घोल को एक चौकोर बर्तन में डाल ठंडा होने देती। ठंडा हो जमने के बाद उसकी बट्टियाँ काट कर उन्हें सूखने रख देती। अगली सुबह तक साबुन तैयार हो जाता। नानी का मानना था कि यह काम पूर्णिमा के दिन करना चाहिए नहीं तो साबुन ठीक नहीं बनता।

अध्याय 2

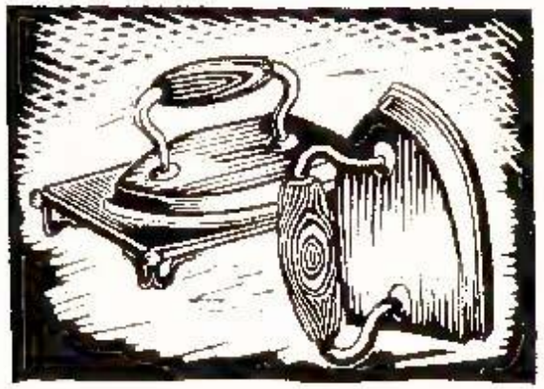

ओला के हैटिसबर्ग आने के कुछ ही समय बाद उसकी माँ और सौतेले पिता उसे नानी के पास छोड़ कर शिकागो, इलिनॉय चले गए। वे दक्षिण के अन्य अफ्रीकी-अमरीकियों की ही तरह मेहनतकश थे। उन्हें लगा कि शायद उत्तर जाने पर वे बेहतर रोज़गार तलाश सकेंगे। ओला की नानी उसे अपने साथ रख बेहद खुश थीं। उन्हें लगा था कि अनजान उत्तर में माँ-बाप काम करने जाएं और ओला को अजनबी लोगों के पास रहना पड़े, यह सही नहीं होगा।

ओसिओला मैकार्टी का पूरा परिवार कड़ी मशक्कत में विश्वास करता था। उसकी नानी सप्ताह में छह दिन गोरों के कपड़ों की धुलाई और इस्त्री करते बिताती थी। नन्ही ओला इस काम में जितनी मदद कर सकती थी, करती। उसकी मासी एवलिन, गोरे परिवारों के लिए खाना पकाने का काम करती और शाम को घर लौट परिवार के कपड़े धुलाई के कारोबार में मदद करती।

उस वक़्त दक्षिण में 'जिम क्रो' कानून लागू थे। ये कानून गोरों ने बनाए थे और कालों के साथ भारी भेदभाव करते थे। रोज़गार, शिक्षा, यहाँ तक कि भोजनालयों और सार्वजनिक संडासों तक में कालों की गोरों के समान पहुँच नहीं थी। इन कानूनों के चलते काले लोगों को सबसे घटिया, कम मेहनताना, पर कड़ी मेहनत के काम ही मिल पाते थे। हैटिसबर्ग के कई काले पुरुष आरा-मिलों में मज़दूरी करते थे और काली औरतें गोरों के घरों में। ग़रीब गोरे परिवार भी काली स्त्रियों को दी जाने वाली कमतर मज़दूरी दे सकते थे।

कुछ काली स्त्रियाँ गोरे परिवारों के साथ रहती थीं। नतीजतन वे अपने बच्चों तक से केवल तब मिल पाती थीं, जब उनकी छुट्टी हो। दूसरी काली औरतें अपने घर पर रहतीं और गोरों के लिए 'दिन का काम' करतीं। अक्सर काम पर जाने-आने और दिन भर खटने के बाद न केवल उनका पूरा दिन बल्की शाम भी गुज़र जाती थी। अपने परिवार की देखभाल और आराम के लिए उनके पास केवल कुछ ही घंटे बचते थे। पर क्योंकि ओला की नानी घर से काम करती थीं वे ओला के साथ समय बिता पाती थीं। दक्षिण की काली स्त्रियों के लिए घर बैठे कमा पाने का एकमात्र उपाय था गोरों के कपड़ों की धुलाई और इस्त्री करना।

उन दिनों लोगों के पास कपड़े धोने की मशीनें नहीं होती थीं। कपड़े हर सप्ताह हाथ से रगड़े, धोए, निचोड़े और सुखाए जाते थे तब उन पर इस्त्री फेरी जाती थी। कपड़े धोने के थकाऊ काम में घंटों लगते थे। सो जिन लोगों का सामर्थ्य था वे इस कमरतोड़ू काम को दूसरों से करवाते थे।

ओला छह बरस की उम्र में यूरेका आरंभिक शाला में पढ़ने जाने लगी। उस स्कूल में केवल काले बच्चे पढ़ा करते थे, क्योंकि दक्षिण का कानून गोरे और काले बच्चों को साथ पढ़ने की इजाज़त नहीं देता था।

ओला बेहद शर्मीली थी, सो स्कूल में उसके ज़्यादा दोस्त नहीं बने। जब वह छठी जमात में आई उसकी मासी एवलिन गंभीर रूप से बीमार पड़ीं। ओला ने स्कूल छोड़ा ताकि घर रह कर मासी की देखभाल कर सके, और नानी परिवार का गुज़ारा चलाने के लिए कपड़ों की धुलाई का काम जारी रख सके।

अगली पतझड़ के मौसम में मासी की हालत सुधरी और वे काम करना शुरू कर सकीं। ओला ने फिर से स्कूल जाना शुरू किया, पर उसके सहपाठी अगली जमात में जा चुके थे। ओला का मन अब स्कूल में नहीं लगा, वह दुखी रहती। साथ ही उसे लगता कि घर में उसकी ज़रूरत अब भी है। उस समय बच्चे अक्सर अपने परिवार की आमदनी में इज़ाफ़ा करने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़ देते थे। ओला को भी स्कूल छोड़ने की इजाज़त मिल गई। अब वह धुलाई के काम में नानी की मदद करने लगी। वह ग्राहकों के घर जाती ताकि धुले कपड़े पहुँचा सके और गन्दे कपड़ों की गठरी धुलाई के लिए घर ला सके। ओला परिवार के धुलाई के कारोबार का ज़रूरी हिस्सा बन गई।

ओला और उसकी नानी अपना काम सुबह सात बजे शुरू करते और रात ग्यारह बजे तक लगे रहते। बेशक वे दोपहरी और रात के खाने के लिए कुछ समय रुकते। वे हाथों से कपड़े रगड़ते, उबालते, धोते और निचोड़ते, तब लकड़ी की क्लिपों के सहारे उन्हें सूखने को टाँगते। धोने की यह पूरी प्रक्रिया तब फिर से दोहराई जाती। कपड़े सूखने के बाद वे उन्हें उतारते, और उनकी तह करते।

कभी-कभार जब कड़ाके की ठंड पड़ती वे धुले कपड़ों को पिछवाड़े के ढ़के हुए आँगन में सुखाते। बाद में उन्होंने कपड़े निचोड़ने का एक यंत्र ख़रीदा जो हाथ से चलाया जाता था। ओला चादर के दो कोनों को रोलरों के बीच फंसाती, उसका हत्था तब तक घुमाती जब तक चादर रोलरों के बीच से पूरी तरह न गुज़र जाए और पूरा पानी न निचुड़ जाए। इससे कपड़े सूखने के लिए टाँगने के पहले ही काफ़ी हद तक सूख जाते।

ओला को हवा में फड़फड़ाती चादरें बेहद अच्छी लगतीं, और मेज़पोश भी जो पगलाए से उड़ते थे। वह कल्पना करती कि वे एक बड़े से जहाज़ के पाल हैं, या फिर आकाश से धरती पर उतरते फ़रिश्ते।

ओला और उसकी नानी सोमवार से शनिवार तक पौ फटने से लेकर सूरज ढ़लने तक धुलाई का काम करते। तब इतवार के अलावा वे हर रात कपड़ों पर इस्त्री फेरते। उस समय कपड़े कपास जैसे प्राकृतिक तन्तुओं से बने होते थे, सो वे सूखने के बाद मुस जाते थे। उन दिनों भाप वाली इस्त्रियाँ तो होती नहीं थीं। धातु की बनी भारी इस्त्रियाँ होती थीं जिन्हें चूल्हे पर गरम करना पड़ता था। ओला उसकी नानी और मासी एवलिन, इस्त्री करने वाली मेज़ों के सामने पास-पास खड़ी होतीं और लालटेन की रोशनी में देर रात तक गाते, बतियाते इस्त्री करतीं। जब सोने का वक़्त हो जाता वे शुभरात्रि कहतीं और सुबह तक गहरी नींद सोतीं। अगली सुबह फिर से काम शुरू करतीं।

ये सारी गतिविधियाँ थीं जिनसे मैकार्टी परिवार की महिलाओं को प्यार था - काम से जुड़ी गतिविधियाँ!

अध्याय 3

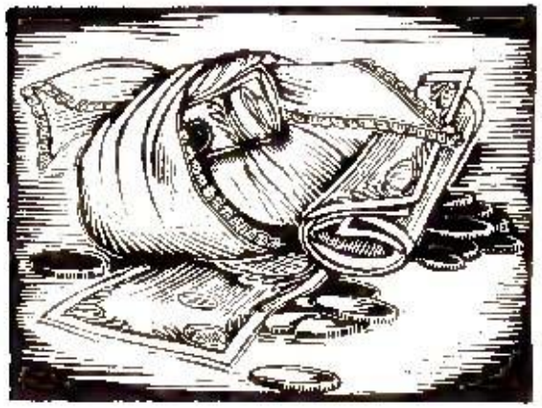

ओला को बेशक स्कूल की याद आती थी, पर उसे परिवार के साथ रहना भी अच्छा लगता था। जल्द ही नानी उसे काम में मदद करने के लिए पैसे भी देने लगी। मैकार्टी परिवार ज़्यादा पैसे नहीं कमाता था। 1920 से लेकर 1935 तक मिसिसिपि की काली धोबनों को कपड़ों की एक गठरी के 50 सेंट से 1.50 डॉलर तक मिला करते थे। एक गठरी का मतलब था, एक चादर में जितने कपड़े बांधे जा सकें। कुछ लोग 1.50 डॉलर की गठरी में काफ़ी कपड़े ठूंस देते थे।

ओला और नानी मिल कर एक दिन में पाँच या छह मध्यम आकार की गठरियाँ धो सकते थे। उस वक़्त एक पाउण्ड कॉफी पचास सेंट में मिलती थी, डबलरोटी 12 सेंट में, और साधारण जूतों की एक जोड़ी 11.50 डॉलर में। चीज़ों की कीमतें बढ़ने के बावजूद मैकार्टी परिवार का मेहनताना बढ़ा नहीं, कम ही रहा।

समय मुश्किलों से भरा था, पर ओला का परिवार अपने काम पर ध्यान देता रहा। ओला जानती थी कि कम कमाई के बावजूद नानी हमेशा कुछ न कुछ बचाती ज़रूर थीं। वे अपनी बचत के नोट और सिक्कों को लेसदार रूमालों बांध अपने गद्दे के नीचे या फिर किसी खाली टीन के डब्बे में आले या अल्मारी में रखी चादरों के नीचे सहेज देती थीं। ज़रूरत के वक़्त के लिए बचाने की इस आदत के कारण नानी अपने सारे उधार चुका पाती थी। ओला भी चाहती थी कि बड़ी हो कर वह भी नानी जैसी किफ़ायती बने।

ओला जानती थी कि उसके परिवार के लिए बचत कितनी ज़रूरी थी। उसके मामा जॉन ने, जो हैटिसबर्ग में ही हर्क्यूलिस पाउडर कॅपनी में काम करते थे, इतना पैसा बचाया कि वे वह घर ख़रीद सके जिसमें नानी, ओला और मासी रहते थे। तब एक और घर अपनी बीबी और बच्चों के लिए भी ख़रीदा।

जब ओला तक़रीबन ग्यारह साल की हुई वह अपने पैसे बचाने लगी ताकि मीठी गोलियाँ ख़रीद सके। वह अपने पैसे ऐसी जगह छिपाती जिसे बड़े कभी छूते तक न थे - किसी से मिली हुई गुड़िया-गाड़ी में साटन के बिछौने के नीचे। बाद में बचत करना ओला की ज़िन्दगी का हिस्सा ही बन गया।

किशोरावस्था में ओला को अहसास हुआ कि नानी बूढ़ी होती जा रही हैं और बहुत दिन काम न कर सकेगीं। सो उसने तय कि कि उसे उस दिन के लिए बचत करनी है। परिवार के बिलों का चुकारा करने ओला ही हमेशा कस्बे में जाती थी। एक बार इस दौरान उसने अपने पैसे बैंक में जमा करवा दिए। ओला का मानना था कि ऐसा करने की प्रेरणा उसे ईश्वर ने दी। क्योंकि उसके परिवार के किसी भी सदस्य ने कभी बैंक में पैसे जमा नहीं करवाए थे।

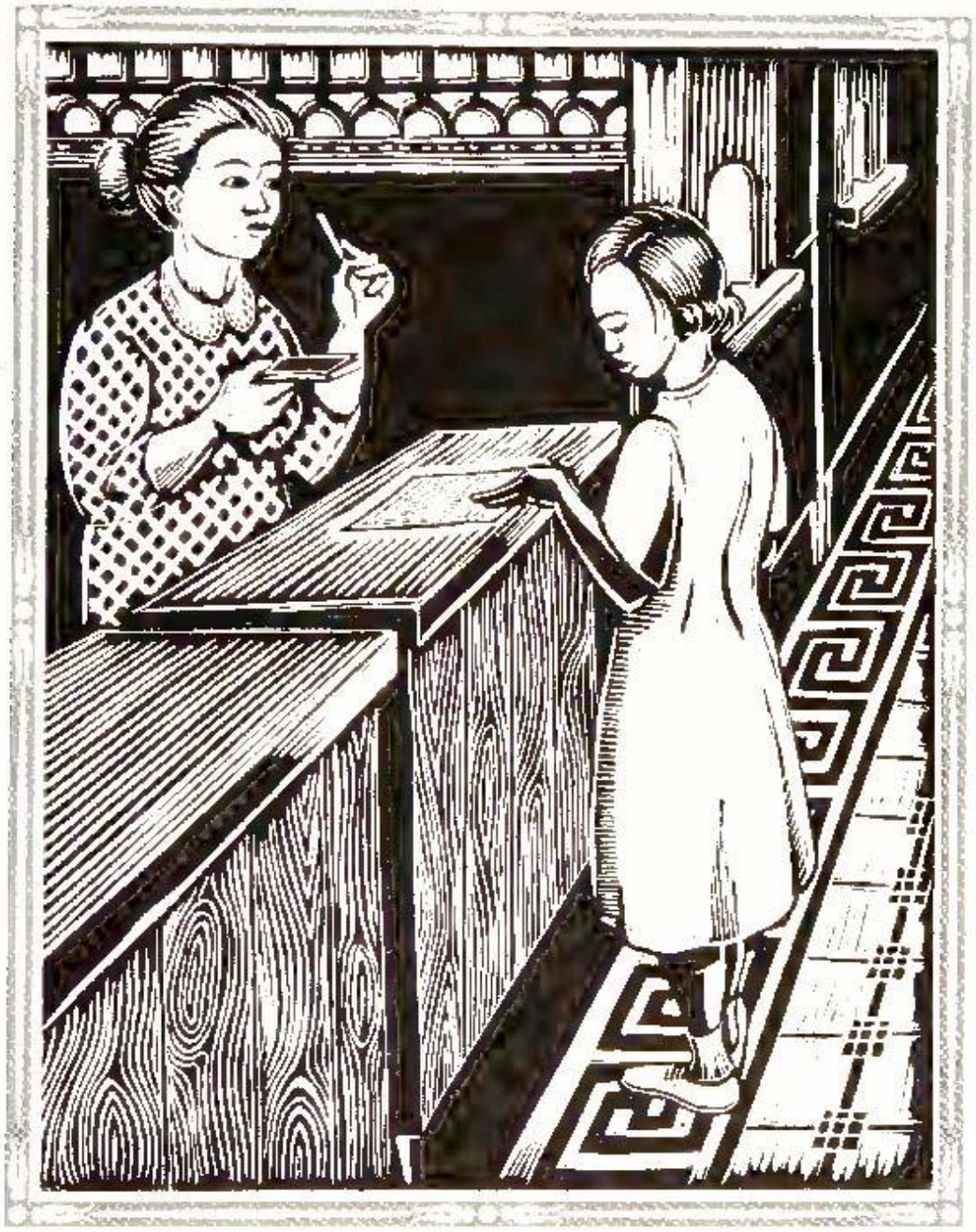

वह अकेले ही हैटिसबर्ग के बैंक में गई और अपना पहला बचत खाता खोला। घर लौटने पर उसने नानी और मासी को अपने खाते की पासबुक दिखाई जिसमें पहली बार जमा की गई राशि का ठप्पा भी लगा था।

नानी और मासी को यह देख खुश हुईं कि जिस नन्ही को उन्होंने पाल-पोस कर बड़ा किया था वह एक ज़िम्मेदार युवती बन गई है। जल्द ही उन्होंने अपनी बचत भी ओला के मार्फत अपने-अपने खातों में जमा करवानी शुरू कर दी।

ओला और उसकी नानी के लिए चर्च बहुत ही अहमियत रखता था। वे हर इतवार संडे स्कूल से कुछ मील दूर बने फ्रैंडशिप बैपटिस्ट चर्च जाते थे। गिरजे की बड़ी प्रार्थना महीने के पहले इतवार को होती थी। गिरजे में प्रार्थनाओं और गॉस्पल गायन ओला को आनन्दित और तरोताज़ा कर देता। आखिरी शान्त भजन उसके दिल को शान्ति और सुकून से भर देता। घर पर देर शाम ओला और उसकी नानी साथ-साथ बाइबल भी पढ़ते थे।

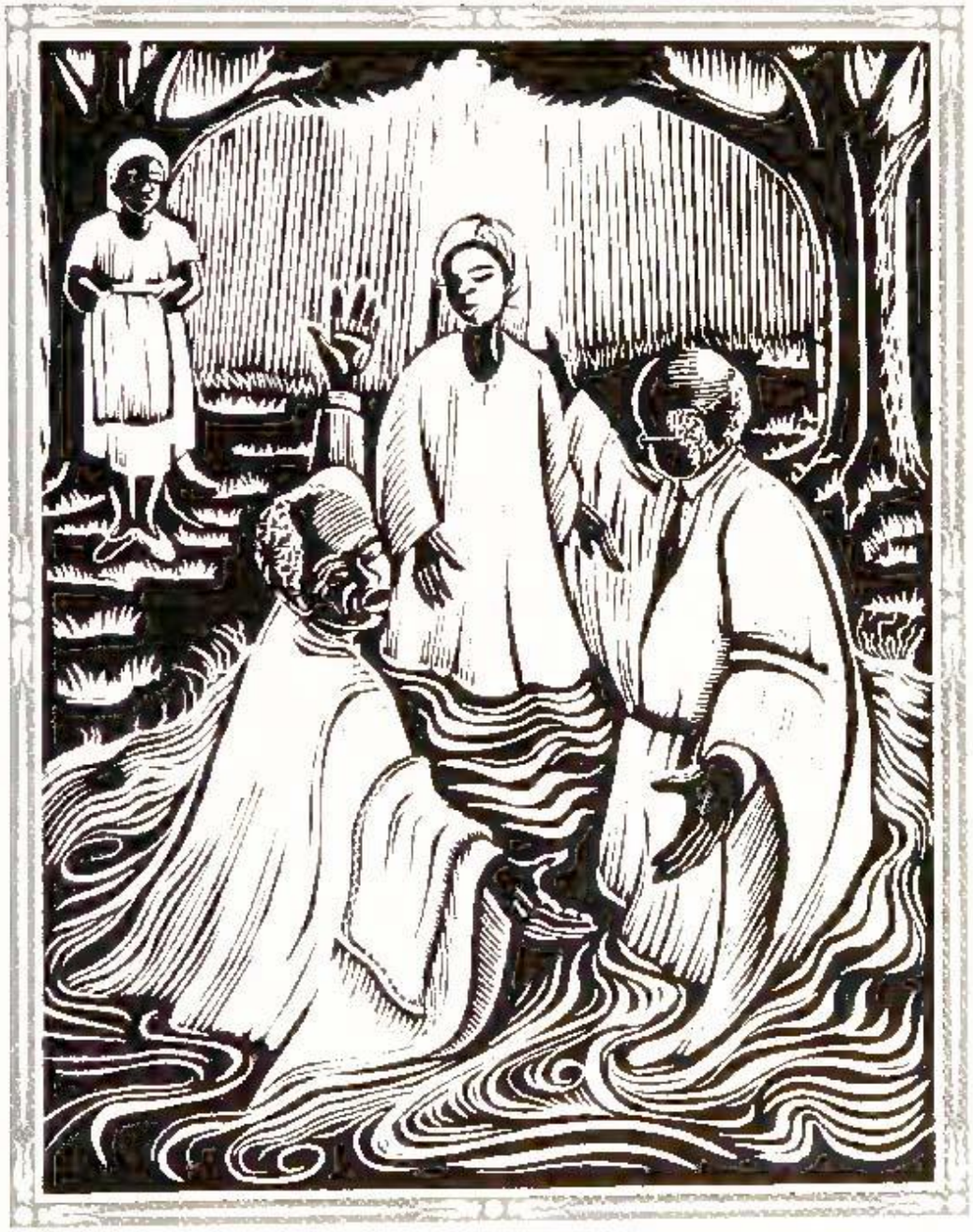

जब ओला तेरह साल की हुई उसने सफ़ेद पोशाक, सफ़ेद मोज़े और सफ़ेद जूते पहने और अपनी नानी और गिरजे के अन्य सदस्यों के साथ पास के तालाब किनारे गई। पादरी और उसके सहायक ने ओला को थामा और ठण्डे पानी में उसका सिर डुबाया। उस दिन उसका बपतिस्मा हुआ था, यह पल ओला कभी नहीं भूली।

जब ओला क़रीब बीस साल की थी, उसकी माँ लौट आईं और परिवार के धुलाई के धंधे में नानी, मासी और ओला के साथ जुड़ गईं। तब तक ओला के सौतेले पिता की बाढ़ में मौत हो चुकी थी। ओला के मामा एल्बर्ट ने घर के पिछवाड़े में एक धोबी घर बनाया ताकि बरसात में भी धुलाई का काम जारी रह सके। मैकार्टी महिलाएं हैटिसबर्ग की सबसे उम्दा धोबनें मानी जाती थीं। साल दर साल वे कपड़े धोती और उनकी इस्त्री करती रहीं। उन्हें अपने काम पर फ़क्र था।

एक बार नानी बीमार पड़ीं। ओला उनके साथ अस्पताल गई। उसने नर्सों की सफ़ेद पोशाकें और टोपियाँ देखीं। उनका पहनावा ओला को बेहद पसन्द आया। ओला को लगा कि नर्सें फ़रिश्तों जैसी लगती हैं। उस दिन से उसके मन में नर्स बनने की इच्छा जगी। पर उसकी शिक्षा प्र्याप्त न थी। पहली बार ओला को स्कूल वापस न लौटने का अफ़सोस हुआ।

पर स्कूली पढ़ाई की कमी ने उन्हें दूसरी चीज़ें करने से न रोका। 1940 के दशक में उन्होंने एक स्थानीय ब्यूटीशियन से बाल काटना-संवारना सीखा और लाइसेंसशुदा हेयर ड्रेसर बन गईं। अब वे घर में ही मुहल्ले की स्त्रियों के बाल संवारने लगीं। परिवार के कपड़े धुलाई का काम भी जारी रखा।

ओला की नानी की मौत 1944 में हुई, जब ओला छत्तीस वर्ष की थीं। उनकी मौत के पहले ओला ने ही उनकी देखभाल की। वे रात को नानी के बिस्तर के पास सोतीं, ताकि उन्हें ज़रूरत पड़ने पर आवाज़ न लगानी पड़े। नानी को ओला से बेहतर नर्स नहीं मिल सकती थी।

अध्याय 4

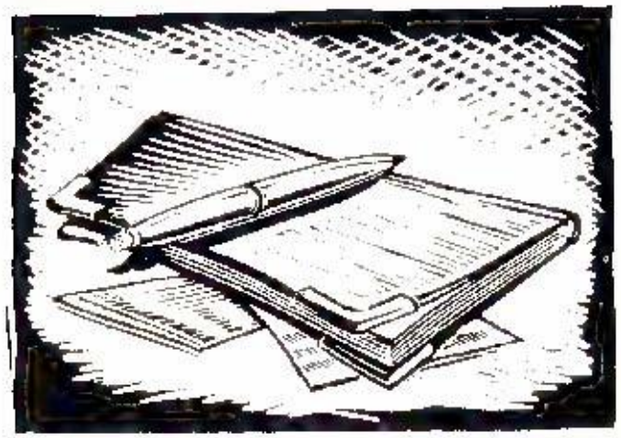

अगले अठारह बरसों तक ओला लोगों के बाल काटती संवारती रहीं और कपड़े धोती रहीं। नानी की मृत्यु के बाद भी ओला बचत करती रहीं। उनकी बचत में अब नानी ने उनके लिए जो राशि छोड़ी थी वह भी जुड़ चुकी थी। अब ओला इसलिए बचत करती थीं कि अगर माँ या मौसी बीमार पड़ें तो उनकी देखभाल की जा सके। वे हर महीने कस्बे जातीं ताकि बैंक में पैसे जमा करवा सकें। उन्होंने अपने खाते से एक बार भी पैसे नहीं निकाले।

जैसे-जैसे नानी और मासी की उम्र बढ़ती गई, ओला ने अपने ज़िम्मे के काम बढ़ा लिए थे। कपड़ों के बेहतरीन धुलाई के लिए उनकी साख भी बढ़ती गई थी। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान पास के शैल्बी सैनिक शिविर का एक ट्रक उनकी सड़क पर धड़धड़ाता आया और उनके घर के सामने रुका। उसमें बैठे अफ़सर ने ओला से कहा कि वे व्यावसायिक लॉन्ड्री की धुलाई से असंतुष्ट थे और चाहते थे कि ओला ही वर्दियाँ धोएं। ओला को देश के लिए धोने-इस्त्री करने का मौका पा बड़ा ही फक्र हुआ। वे नानी के लोहे वाले बड़े से पात्र में सैनिकों की कमीजें, पतलूनें और अन्दरूनी कपड़े धोने लगीं।

1950 के दशक में लोगों के घरों में कपड़े धोने और सुखाने की मशीनें आ गई थीं। सो ओला ने अपने अधिकांश ग्राहकों के कपड़े धोने तो बन्द कर दिए, पर इस्त्री का काम वे करती रहीं। उन्होंने अपने लिए भी कपड़े धोने की एक मशीन ख़रीदी, पर वे उससे खुश न थीं। उन्होंने मशीन अपने किसी रिश्तेदार को दे दी।

ओला की माँ की मृत्यु 1964 में हुई और मासी की 1967 में। ओला अकेले ही पारिवारिक धंधा चलाती रहीं। उन्होंने पचास वर्षों तक कपड़े धोने और उनकी इस्त्री करने का काम किया - यानी पहले विश्व युद्ध, 1930 की

महामन्दी, और दूसरे विश्व युद्ध से लेकर 1960 के दशक के नागरिक अधिकार आन्दोलन के दौरान भी। अब ओला के कुछ ग्राहक काले भी थे। नागरिक अधिकार आन्दोलन के कारण शिक्षा तक कालों की पहुँच बढ़ी और उन्हें रोज़गार के ऐसे अवसर भी मिलने लगे जो पहले उन्हें दिए ही नहीं जाते थे। आय बढ़ने के साथ वे भी अपने कपड़ों की इस्त्री किसी और से करवा सकते थे। ओला का फ़क्र था कि वे अपने समुदाय के लोगों के लिए भी काम कर पा रही हैं। वे जानती थीं कि अफ्रीकी-अमरीकियों ने न्याय और समानता के लिए एक लम्बी जंग लड़ी और जीती है।

ओला की कमाई में भी अब इज़ाफ़ा हुआ था। 1960 के बाद उन्हें प्रति गठरी 5 डॉलर, तब 10 और 20 डॉलर भी मिलने लगे थे।

साल पर साल गुज़रते गए। ओला हैटिसबर्ग के लोगों के लिए सत्यासी की उम्र तक कपड़ों की इस्त्री करती रहीं। तब एक दिन वे इस्त्री करते-करते ही बेहोश हो गईं। डॉक्टर ने सलाह दी कि उन्हें काम करना बन्द कर देना चाहिए। पर ओला सेवा निवृत्त नहीं होना चाहती थीं। उन्हें तो उनका काम ही आनन्द और संतुष्टि देता था। उन्होंने एक बार कहा था, "अगर मैं काम पर लौट सकी तो मैं फिर से काम करना चाहूँगी।"

ओला ने शादी नहीं की थी, सो उनके कोई बाल-बच्चे भी नहीं थे। उन्हें अक्सर यह दुख होता था कि वे अब निपट अकेली रह गई हैं। पर वे ईश्वर के साथ अपने रिश्ते में सुकून तलाशती थीं। यह उन्हें बखूबी आता था।

नानी ने ही ओला को ईश्वर पर भरोसा करना सिखाया था। ओला हर दिन घर में ही बाइबल पढ़ा करती थीं।

ओला अपने छह कमरों के मकान में रहती रहीं, जिसे उनके मामा जॉन ने 1940 के दशक के अन्त में उनके नाम कर दिया था। बेशक वे सादगी से रहती थीं, पर उनके पास वह सब था जिसकी उन्हें ज़रूरत थी। हाँ उनके पास मोटर गाड़ी नहीं थी, सो वे हर जगह पैदल जातीं। मील भर दूर बिग स्टार सुपर मार्केट से अपनी ख़रीददारी लाने के लिए अपनी ठेला गाड़ी भी धकिया कर ले जातीं। वे अपने पेड़-पौधों की देखभाल करतीं। वे बहुत बोलती नहीं थीं, क्योंकि उनके परिवार के क़रीबी लोग अब बचे ही नहीं थे। वे अपनी ज़िन्दगी से खुश थीं। पर एक बड़ा अफ़सोस उन्हें यह था कि वे अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सकी थीं।

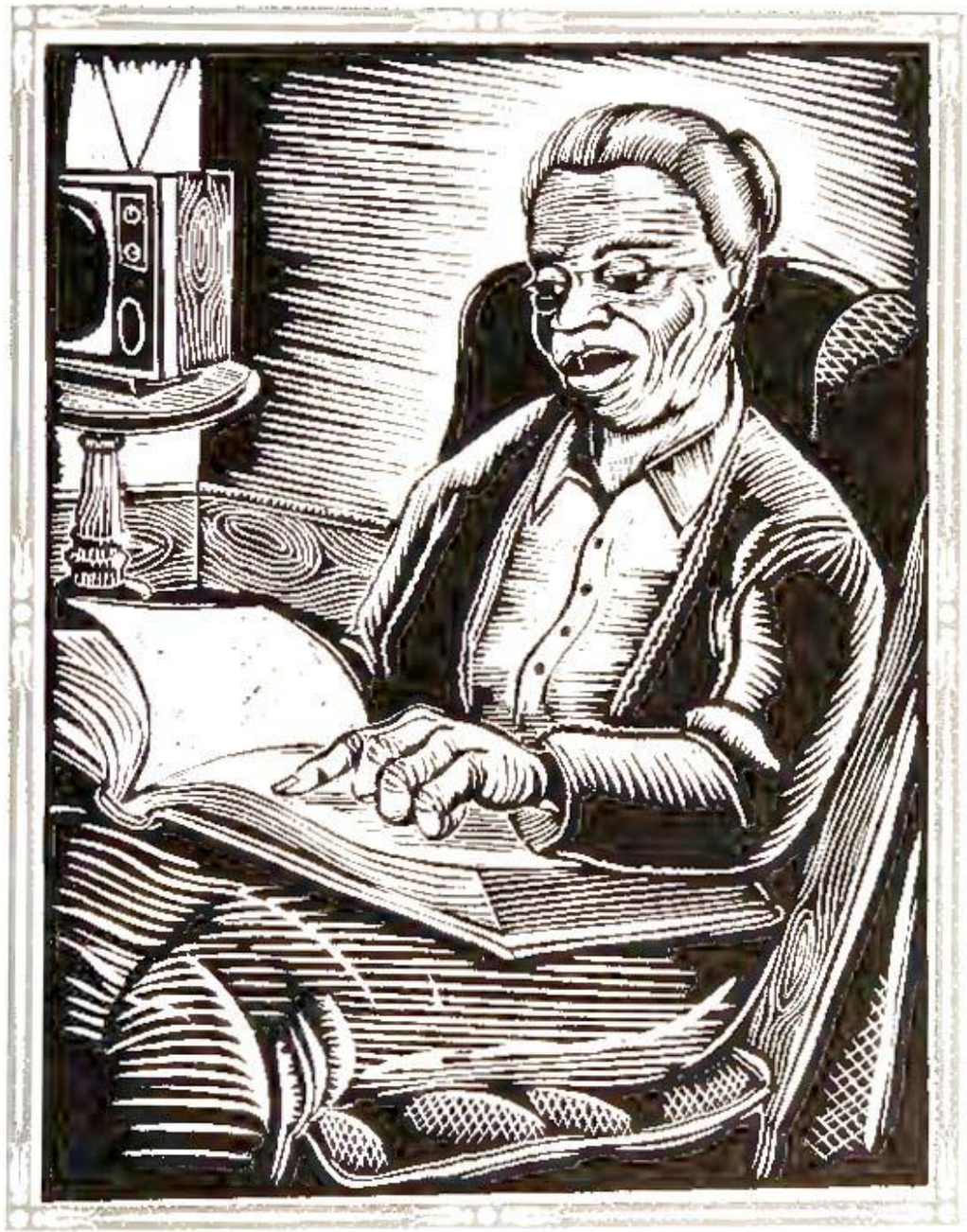

ओला ने ज़िन्दगी भर अपने पैसे बचाए थे। माह दर माह उनकी बचत में इज़ाफ़ा होता गया था। तब नानी, माँ और मासी से मिले पैसे भी उनके बचत खाते में जमा हुए थे। अब ओला के पास काफ़ी पैसे थे। उनकी उम्र भी बढ़ रही थी और किसी दिन वे भी इस संसार से विदा लेने वाली थीं। सो यह सवाल उन्हें सताने लगा कि वे अपना पैसा किसे दें?

ओला ने अपना जीवन घर में दूसरों के कपड़े धोते, उन पर इस्त्री फेरते गुज़ारा था। वे बच्चों की कई पीढ़ियों को स्कूल जाते-आते देख चुकी थीं। उन्हें वह मौका मिल रहा था जिससे ओला चूक गई थीं। इसलिए उन्होंने सोचा कि वे अपना पैसा सार्वजनिक स्कूल को दान कर देंगी। पर तब उन्हें सूझा कि कॉलेज की पढ़ाई में युवा वर्ग की मदद करना और ज़्यादा ज़रूरी है। सो उन्होंने दक्षिण मिसिसिपि विश्वविद्यालय को चुना क्योंकि वह हैटिसबर्ग में ही था।

ओला चाहती थीं कि युवा वर्ग यह समझे कि दो चीज़ें उनके जीवन को समृद्ध बना सकती हैं। पहली यह कि जो भी काम किया जाए वह ठीक से किया जाए। दूसरी थी शिक्षा - ओला को हमेशा लगता था कि काश उन्होंने भी अपनी पढ़ाई जारी रखी होती।

सो जुलाई 1995 में, सत्यासी वर्ष की ओला ने स्थानीय बैंक में एक ट्रस्ट फंड (कोष) स्थापित किया। इससे सुनिश्चित हो सका कि कम से कम 150,000 डॉलर युनिवर्सिटी ऑफ सदर्न मिसिसिपि को मिलें ताकि वे ओसिओला मैकार्टी छात्रवृत्ति दे सकें। इसके तहत हर साल मिसिसिपि के किसी हाई स्कूल स्नातक को कुछ राशि दी जानी थी, ताकि कॉलेज की पढ़ाई जारी रखने में उसे मदद मिले। ओला के बैंकर ने कुछ राशि पहले से ही अलग कर दी ताकि ओला की देखभाल हमेशा हो सके।

19 अगस्त 1995 में ओला ने पहली बार किसी कॉलेज के परिसर में कदम रखा। दक्षिण मिसिसिपि विश्वविद्यालय के एक हज़ार शिक्षक व कार्यकर्ताओं ने उनके आने पर, खड़े होकर उनका स्वागत किया। उसी वर्ष सितम्बर में हैटिसबर्ग के समुदाय ने ओला की उदारता के सम्मान में ओसिओला मैकार्टी दिवस मनाया।

ओला मशहूर हो गईं। लोगों को अचरज होता कि एक अदनी सी कपड़े धोने वाल महिला इतनी बड़ी राशि बचा सकी थीं और उसका एक बड़ा हिस्सा दान में दे सकी थीं। राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने उन्हें राष्ट्रपति नागरिक पदक से नवाज़ा, जो सामान्य नागरिकों को दिया जाने वाला देश का दूसरा सबसे बड़ा सम्मान था। ओला नई पोशाक पहन कर व्हाइट हाउस गईं।

अब तक ओला सिर्फ एक बार मिसिसिपि के बाहर गई थीं। पर अगले तीन सालों में ओला ने चौहत्तर बार देश के चौंतीस शहरों में पुरस्कार लेने के लिए यात्राएं कीं वे राष्ट्रीय टेलिविज़न पर भी दिखीं। अनेक पत्रिकाओं और अख़बारों में उन पर लेख छपे। *सिम्पल विस्डम फॉर रिच लिविंग* शीर्षक से उनके जीवन पर एक पुस्तक लिखी गई। कई विश्वविद्यालयों ने उन्हें सम्मानित किया। 1996 के ओलम्पिक खेलों के दौरान उन्हें ओलम्पिक मशाल को कुछ दूर ले जाने का सम्मान मिला। ओला ने यह काम जीवन में पहली बार शॉर्टस् (छोटी पतलून) पहन कर किया। टेड टर्नर नामक एक धनी व्यवसायी ने कहा कि ओला की निस्वार्थ भावना ने उन्हें यह प्रेरणा दी के वे संयुक्त राष्ट्रसंघ को एक बिलियन (एक अरब) डॉलर का दान दें। पर जो सम्मान ओला को सबसे अधिक पसन्द आया वह था मैम्फिस, टैनेसी के बैप्टिस्ट मेमोरियल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग द्वारा दी गई नर्सिंग की मानद् डिग्री।

पहली ओसिओला मैकार्टी छात्रवृत्ति, स्टैफनी बुलक को 1995 में दी गई। स्टैफनी हैटिसबर्ग के हाई स्कूल की अफ्रीकी-अमरीकी स्नातक थीं। स्टैफनी ओला की धर्म पुत्री (गॉड डॉटर) भी बनीं।

कुछ ही समय बाद छात्रवृत्ति के कोष में काफी इज़ाफ़ा हुआ। 1995 की पतझड़ में स्थानीय व्यवसायिक स्त्री-पुरुषों ने, जिन्होंने ओला के हाथों धुले और इस्त्री फेरे कपड़े पहने थे, तय किया कि वे ओला द्वारा दान की गई राशि के बराबर राशि का कोष में दान करेंगे। और यह उन्होंने किया भी। ओला के औदार्य से प्ररित हो तीस राज्यों के छह सौ से अधिक लोगों ने ओला के छात्रवृत्ति कोष के लिए धन दिया। यह कोष जल्द ही 380,000 डॉलर तक पहुँच गया और अब हर वर्ष छह ज़रूरतमन्द विद्यार्थियों के कॉलेज की फीस उपलब्ध करवाई जा सकी। पहली ओसिओला छात्रवृत्तिधारी 1998 में स्नातक बनी।

ओला अपना जीवन सादगी से जीती रहीं। वे अपने नए एयर-केडिशनर तक को सिर्फ तब चलाती थीं जब कोई उनसे मिलने आता। और वे अपने पैसे अब भी बचाती थीं।

1997 की गर्मियों में जब उनसे पूछा गया कि वे बच्चों से ऐसा क्या कहना चाहेंगी जो बच्चे हमेशा याद रखें, तो उनका जवाब था: "अगर तुम ऐसा काम करते हो जिस पर तुम्हें फ़क्र है तो तुम्हारे मन में हमेशा आत्म-सम्मान होगा। शिक्षा पाने से ज़्यादा ज़रूरी कुछ भी नहीं हो सकता। काम हमेशा वही करना चाहिए जिससे तुम्हें प्यार हो।"

ओसिओला मैकार्टी की मृत्यु 26 सितम्बर 1999 में हुई।

लेखिका की कलम से

ओला अब भी सादगी से अपना जीवन जीती हैं, पर उनका जीवन बदल चुका है। उनके दिन उन लोगों की झप्पियों से भरे हैं जो उन्हें प्यार करते हैं, उनकी कद्र करते हैं। जब मैं ओला से मिलने उनके घर गई, स्टैफनी बुलक जिसे पहली ओसिओला मैकार्टी छात्रवृत्ति दी गई थी, अपनी एक दोस्त को ओला से मिलवाने लाई थी। बाद में जब मॉल में हम साथ-साथ गए ओला ने अपने प्रशंसकों का हाथ हिलाकर अभिवादन किया, मुस्कुराईं। एक दुकान में काम करने वाली युवती ने उन्हें पहचाना और दौड़ कर आ अपनी शुभकामाएं दीं। एक भारतीय दम्पति ने उन्हें अपनी दुकान में आइसक्रीम खाने को बुलाया। हैटिसबर्ग में उनके साथ घूमते वक़्त हर कौम और हर पेशे के लोगों ने ओला का अभिवादन किया।

हम इतवार को उनके गिरजे में प्रार्थना करने गए। वहाँ उनसे आग्रह किया गया कि वे हाई स्कूल के स्नातकों को कुछ कहें। उन्होंने कहा, "जितनी शिक्षा पा सको, ज़रूर पाओ।" साथ ही यह भी जोड़ा "काश मैं और पढ़ पाती।"

मैं उम्मीद करती हूँ कि यह पुस्तक दर्शा सकेगी कि शिक्षा एक अद्भुत मौका है जिसका महत्व कम नहीं आँकना चाहिए; कि बचत छोटी-छोटी राशियों को क्रमशः एक बड़ी राशि में बदल देती है; और काम कितना भी साधारण-सा क्यों न हो फ़क्र और संतोष का स्त्रोत होता है।

हम बच्चों से कहते हैं कि कड़ी मेहनत और त्याग के बिना वे खास कुछ हासिल नहीं कर पाएंगे। पर हम एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जो उन लोगों की वाहवाही नहीं बल्की बेकद्री ही करती है, जो पौ फटने के पहले उठते हैं और अक्सर बेहद थकाऊ काम करते हैं। हम उन लोगों की वाहवाही और कद्र करते हैं जिन्हें हम मशहूर मानते हैं। देहाड़ी मज़दूर, निर्माण मज़दूर, पैट्रोल पम्प में काम करने वाले, किराने की दुकान में मदद करने वाले, यहाँ तक कि शिक्षक को भी सिर हिला कर मौन अभिवादन से ज़्यादा कुछ नहीं मिलता है।

पर ये ही तो वे गुमनाम नायक हैं, जो दुनिया को जीने के लिए एक बेहतर जगह बनाते हैं।

मैं ओसिओला मैकार्टी के बारे में इसलिए लिखना नहीं चाहती थी कि उन्होंने एक विश्वविद्यालय को इतनी बड़ी राशि दी, इसलिए भी नहीं कि उन्होंने इतनी बचत की। बल्की इसलिए लिखना चाहती थी कि वे कुछ सच्चाइयों का जीता-जागता उदाहरण हैं: हर तरह का काम मूल्यवान होता है और यह ज़रूरी है कि आप ऐसा काम तलाशें जिससे आप प्यार कर सकें।

जब हम बच्चों को यह सिखाते हैं कि काम करने का एकमात्र कारण पैसे कमाना है, तब हम उन्हें ऐसे इन्सान बनाते हैं जो सम्मानजनक काम नहीं करते। बल्की ऐसे काम करते हैं जो समुदाय और दुनिया को नुकसान पहुँचाएं।

हमें अपने बच्चों को ख्याति या धन के लिए नहीं बल्की संतुष्टि और सम्मान के लिए काम करना सिखाना चाहिए। काम के दौरान ही हम तलाश पाते हैं कि हम क्या हैं और दुनिया को अपने गुणों का लाभ दे पाते हैं।

मेरे पिता हमेशा कहते थे कि सभी काम सम्मानजनक होते हैं। यह मानना सही नहीं है कि कुछ काम दूसरों से महत्वपूर्ण हैं। कोई भी जो न्याय और ईमानदारी से काम करता है वह हमारी श्रद्धा, हमारे सम्मान का पात्र है।

जब बच्चे इस क़िताब को पढ़ें तो उम्मीद है कि वे ओसिओला मैकार्टी के जीवन के कुछ क़ीमती पाठ सीखेंगे:

आड़े वक़्त के लिए बचाओ

स्वयं को शिक्षित करो ताकि वह काम कर सको जो तुम करना चाहते हो

वह काम तलाशो जो तुम्हें करना पसन्द है, और उसे अपना काम/पेशा बनाओ

तुम्हारा काम कुछ भी क्यों न हो, उसे भरसक अच्छी तरह करो

दूसरों को दो, क्योंकि यह तुम्हें भी खुशी देगा

अपने सपनों या लक्ष्यों को हासिल करने के लिए कभी 'बहुत देर' नहीं होती, फिर चाहे तुम्हारी उम्र, कौम, लिंग या परिस्थितियाँ कुछ भी क्यों न हों।

- एवलिन कोलमैन

ओसिओला मैकार्टी

ने अपना जीवन दूसरों के कपड़े धोते, उन पर इस्त्री फेरते बिताया। वे बहुत नहीं कमाती थीं, इसके बावजूद अपनी आय में से कुछ न कुछ बचत ज़रूर करती थीं। उनका एकमात्र अफ़सोस यह था कि वे बहुत कम पढ़ पाईं। इसलिए क्योंकि उन्हें अपने परिवार की मदद के लिए स्कूल छोड़ना पड़ा।

1995 में सत्यासी वर्ष की उम्र में उन्होंने एक अद्भुत काम किया। ओसिओला मैकार्टी ने अपने कस्बे में स्थित दक्षिण मिसिसिपि विश्वविद्यालय को 150,000 डॉलर दान में दिए ताकि युवा अपनी कॉलेज की पढ़ाई जारी रख सकें।

यह उनकी कहानी है।